Research Inspiration
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Access & Indexed)
Web: www.researchinspiration.com; Email: publish1257@gmail.com
ISSN: 2455-443X
Vol. 3, Issue-II
March 2018
e-ISJN: A4372-3069
Impact Factor : 4.012 (IIJIF)

शेखावाटी क्षेत्र के जल मन्दिरों की स्नान परम्पराएं : एक सांस्कृतिक अध्ययन

हरलाल सिंह
पीएच.–डी. शोधार्थी व राजीव गांधी नेशनल रिसर्च फैलो
इतिहास व भारतीय संस्कृति विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

डॉ. मंजु गुप्ता
एसोसियेट प्रोफेसर
राजकीय कन्या महाविद्यालय, टोंक

सार–संक्षिप्तिका

शेखावाटी भारतवर्ष के राजपूताना के जयपुर राज्य का अधीनस्थ प्रान्त रहा है। राव शेखा व उसके वंशजों द्वारा स्थापित तथा शासित इस अंचल की एक अलग समृद्ध संस्कृतिक परम्पराएं व इतिहास है। इस क्षेत्र की लोक संस्कृति की अनेक परम्पराएं हैं। जिनमें यहां के जल मन्दिरों से जुड़ी अनेक सांस्कृतिक विरासते अपने अलग–अलग प्रतिमान रखती हैं। विशेषकर नदी एवं जलकुण्ड लोगों की जल क्षुधा को तो तृप्त करते ही रहे हैं वहीं इनसे जुड़ी स्नान की दुर्लभ परम्पराएं लोगों के जीवन में मिठास, उमंग, उल्लास व सरसता लाती हैं। इसके साथ ही एक अलग सांस्कृतिक परम्परा का अध्याय भी प्रस्तुत करने का विनम्र साहस रखती हैं।

यह क्षेत्र विषम जलवायु वाला अर्द्ध–शुष्क प्रदेश होने के कारण यहां का जीवन सदैव ही जीवट शैली से ओतप्रोत रहा है। इसी नीरस जीवन शैली में सरसता का संचार प्रवाहित करने की क्षमता का परिणाम शेखावाटी की ऐतिहासिक जल धरोहर के प्रतीक जलकुण्ड हैं, जिसके साथ जुड़ी हैं यहां की विशिष्ट स्नान परम्परा। धार्मिक आस्था से लबरेज इस स्नान परम्परा से जल मन्दिरों के प्रतीक नदी व जलकुण्ड अपने ऐतिहासिक स्वरूप को कुछ समय के लिए त्यागकर वर्तमान बन पुर्नजीवित हो उठते हैं। जल मन्दिरों के इस आध्यात्मिक कुम्भ में जब आस्था डुबकी लगाती है तो इस जल धरोहर का दृश्य देखते ही बनता है। विशेषकर जब लोहार्गल के सूर्यकुण्ड में श्रावण मास में जन सैलाब उमड़ता है तो कावड़ियों के कलात्मक चलित मन्दिरों व बोल बम तड़क बम के जयकारों से सारा वातावरण आस्था व विश्वास का संगम स्थल बन जाता है। जब इस जल धरोहर का सानिध्य लोगों को जल स्नान के रूप में मिलता है तो इन जलाशयों के प्रति जनमानस का दृष्टिकोण भक्ति व आस्था से भर जाता है।

---

1. शेखावाटी– शेखावाटी प्रदेश भारत के इतिहास व संस्कृति में एक प्रमुख स्थान रखता है। यह प्रदेश राजपुताना के जयपुर राज्य का सबसे बड़ा अधीनस्थ प्रान्त रहा है।[1] अपने वैभवशाली इतिहास, अनुपम कला व संस्कृति से सम्पन्न यह प्रान्त भारत के मानचित्र में उत्तरी–पूर्वी राजस्थान के मरूस्थलीय प्रदेश शेखावाटी में विशिष्ट स्थान रखता है। इसके अन्तर्गत सीकर, झुन्झुनूं ज़िले व चूरू ज़िले के दक्षिण–पूर्वी भाग को सम्मिलित किया जाता हैं।[2]

ऐतिहासिक दृष्टि से इसमें अमरसरवाटी, झुन्झुनूंवाटी, उदयपुरवाटी, खण्डेलावाटी, नरहड़वाटी, सिंघानावाटी, सीकरवाटी, फतेहपुरवाटी आदि कई भाग परिगणित होते रहे हैं। इनका सामूहिक नाम ही शेखावाटी प्रसिद्ध हुआ।

मध्यकालीन शासक राव शेखा व उनके वंशजों द्वारा शासित प्रदेश **'शेखावाटी'** कहलाता है।[3] यह प्रदेश राजपूताना के अन्तर्गत सबसे बड़ी निज़ामत के रूप में था। यह क्षेत्र 27°20′ तथा 28°34′ उत्तरी एवं 74°41′ तथा 76°6′ पूर्वी देशान्तर पर स्थित है।[4] शेखावाटी के उत्तर तथा पश्चिम में भूतपूर्व बीकानेर राज्य, दक्षिण–पश्चिम में भूतपूर्व जोधपुर राज्य, दक्षिण–पूर्व में तंवरावाटी व भूतपूर्व जयपुर राज्य तथा उत्तर–पूर्व में लुहारू तथा झज्जर राज्य स्थित हैं। परन्तु इसकी भौगोलिक सीमाएं सीकर और झुन्झुनूं दो जिलों तक ही सीमित मानी जाती रही हैं।[5] वर्तमान शासन–व्यवस्था में भी इन दो ज़िलों को ही शेखावाटी माना गया है।[6] परन्तु संस्कति की सीमाओं का इतिहास निर्धारण में कोई मापदण्ड नहीं है। सांस्कृतिक दृष्टि से इसकी सीमाएं शेखावाटी क्षेत्र की राजनीतिक व प्रशासनिक सीमाओं से बहुत दूर–दूर तक फैली हैं।

2. जलाशय– राव शेखा व उसके वंशजों द्वारा स्थापित व शासित शेखावाटी में जल के प्रति सदैव ही पूजनीय व सम्मानीय भाव रहा है। इसकी सबसे बड़ी वजह यह कि इस क्षेत्र में वर्षा सदैव से ही कम होती रही है।[7] अर्थात् हमेशा अकाल[8] की ही स्थिति रहती है। अतः जितना पानी वर्षा या बरसात के रूप में प्राप्त होता उस जल को संचित करने की इस क्षेत्र के लोगों द्वारा अनेक विधियां आविष्कृत की गई।[9] जिनमें नदियों के किनारे खोदे गए कुएं व बावड़ियां, पहाड़ी व मैदानी क्षेत्रों में निर्मित बांध, कुण्ड व तालाब ऐसी स्थापत्य की जल संरंचनाए थी जिनमें वर्षा का जल संचित एवं संरक्षित किया जा सकता था। इन्हीं जलाशयों के परिवेश में इस क्षेत्र की सांस्कृतिक महत्व की अनेक परम्पराओं ने जन्म लिया जिनमें नदी व कुण्ड स्नान भी इस क्षेत्र की दुर्लभ परम्परा रही है। जिसमें लोगों की धार्मिक निष्ठा व आस्था के दर्शन होते हैं।[10] नदी व जल कुण्डों की महत्ता जल से है परन्तु इनका महात्म्य इनके समीप बने मन्दिर व इनके ऐतिहासिक महत्व से है। जिनके प्रति इस क्षेत्र के लोगों का अनन्य श्रद्धाभाव है। यही वजह है कि शेखावाटी के जलाशयों के निकट बने मन्दिर आज भी पूजनीय है। ये मन्दिर आस्था के ही नहीं वरन् पर्यावरण प्रहरी की भूमिका के प्रतीक भी हैं। लोग जब इन जलाशयों पर सामान्य स्नान के निमित्त भी जाते हैं तो सर्वप्रथम इन मन्दिरों से दूर ही जूते–चप्पल खोलकर जाते हैं व इनमें जल चढ़ाते हैं।[11]

3. नदी स्नान– शेखावाटी क्षेत्र में बरसाती नदी के रूप में कांतली, रूपावती व शोभावती जैसी नदियां हैं। इनमें त्रिवेणी सहित शोभावती नदी का धार्मिक महात्म्य है। श्रावण मास में मालकेतु की 24 कोसीय परिक्रमा में स्नान व दान पुण्य के प्रमुख 9 स्थलों में शोभावती नदी भी एक महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल है। जहां तीर्थ यात्री स्नान करके ही अपनी अगली यात्रा सुनिश्चित करता है।[12] इसके अतिरिक्त श्री माधोपुर से 38 किलोमीटर तथा अजीतगढ़ गांव से 9 किलोमीटर दूर स्थित पवित्र धार्मिक तीर्थ व शेखावाटी की एकमात्र त्रिवेणी स्थित है। यहां पहाड़ियों से निकलकर आने वाली तीन धाराओं का संगम होता है। जहां लोग प्रतिवर्ष चैत्र कृष्ण द्वितीया को भरने वाले मेले पर डुबकियां लगाते हैं। कहा जाता है कि इस त्रिवेणी में स्नान करने से शरीर के समस्त चर्म रोगों का नाश होता है। नदी स्नान का यह महात्म्य क्षेत्र की धार्मिक संस्कृति में अपनी अलग ही भूमिका निभाता है।[13]

4. जलकुण्ड[14] स्नान– कुण्ड धार्मिक महात्म्य के लिहाज से सामाजिक संस्कृति के महत्वपूर्ण जीवंत साक्ष्य हैं। जहां लोग पवित्र स्नान के पश्चात् दान पुण्य करते हैं। शेखावाटी में इस प्रकार के जल कुण्ड लोहार्गल, शाकम्बरी, मनसा माता, किरोड़ी, गणेश्वर व कदमां का बास में स्थित हैं। इन कुण्डों में बरसाती व पहाड़ी झरनों का पानी प्रवाहित होता है। इन जल कुण्डों के समीप लगने वाले मेलों में शेखावाटी के आध्यात्मिक जीवन के प्रति आस्थागत दृष्टिकोण का प्रकटन होता है।

4.1 सूर्यकुण्ड स्नान– लोहार्गल राजस्थान के शेखावाटी क्षेत्र के झुन्झुनूं ज़िले से 70 किलोमीटर दूर दक्षिण की ओर अरावली पर्वत की घाटी में बसे उदयपुरवाटी कस्बे से 10 किलोमीटर की दूरी पर पश्चिम में स्थित है। राजस्थान में पुष्कर के बाद दूसरा तीर्थ लोहार्गल को ही माना जाता है। लोहर्गल के सूर्यकुण्ड के स्नान को गंगा स्नान से भी बड़ा बताया गया है।[15]

यहां श्रावण माह में कावड़ियों का मेला लगा रहता है और सम्पूर्ण शेखावाटी बोल बम तड़क बम के जयकारों से गुंजायमान होती रहती है। यह माह रोमांचित कर देने वाले भगवान शिव के चलित मन्दिरों से एक नवीन दुनिया का आभास कराता है। भाद्रपद माह में श्रीकृष्ण जन्माष्टमीं से अमावस्या तक मालकेत बाबा के नाम पर पहाड़ों की 24 कोसीय परिक्रमा होती है। जिसमें हजारों लाखों नर–नारी परिक्रमा कर पुण्य लाभ कमाते हैं। यह परिक्रमा इसलिए और भी ज्यादा प्रासंगिक हो जाती है कि श्रावण मास का बरसात का महीना जिसमें प्रकृति अपने सम्पूर्ण यौवन में होती है और शृगारित भी। इस हरे–भरे एवं स्वच्छ वातावरण में औषधीय गुणों से लबरेज पेड़–पौधों से आती शुद्ध ताजा हवा का लुत्फ लोगों को तरोताजा बना देता है। फिर स्वच्छ मन की शुद्धता की खुशहाली की कामना के साथ धार्मिक अनुष्ठान इसमें चार चाँद लगा देता है। इस परिक्रमा में तीर्थाटन के साथ पुण्यों का अनोखा मिश्रण दिखाई देता है। सात दिवसीय इस परिक्रमा का प्रारम्भ एवं समापन सूर्यकुण्ड में स्नान से ही होता है। इस दौरान तीर्थयात्री सूर्यकुण्ड सहित 9 स्थलों पर स्नानादि से निवृत हो दान पुण्य करता है। ये स्थल हैं– ब्रह्मकुण्ड (ज्ञान वापी), कर्कोटक तीर्थ (कोटिश्वर शिव), शक्रतीर्थ, कुहकुण्ड, नागकुण्ड, टपकेश्वर, शोभावती एवं खुरकुण्ड। इन सभी में स्नान का अपना अलग ही महात्म्य है। इस समय दान–पुण्य करने वाले सेठ–साहूकारों के भारी मात्रा में खान–पान के भण्डारे लग जाते हैं। परन्तु ज्यादातर लोग दान में मिले भोजन का प्रयोग नहीं करते हैं। इसके अतिरिक्त यहां प्रतिवर्ष माघ मास की सप्तमीं को सूर्यसप्तमीं महोत्सव मनाया जाता है, जिसमें भगवान सूर्यनारायण की शोभायात्रा के अलावा सत्संग व प्रवचन के साथ विशाल भण्डारे का आयोजन भी किया जाता है।[16]

यह शेखावाटी का सर्वाधिक पौराणिक धार्मिक स्थल है। जिसके साथ जुड़े हैं महाभारतकालीन पाण्डव व भगवान परशुराम के कथानक व उनके स्नान से जुड़ी जनश्रुतियां। जनश्रुति के अनुसार महाभारत युद्ध विजय के पश्चात् पाण्डव अपने परिजनों की हत्या के पाप से चिन्तित थे। लाखों लोगों के पाप का दर्द देखकर श्री कृष्ण ने उन्हें बताया कि जिस तीर्थ स्थल के तालाब के पानी में तुम्हारे अस्त्र–शस्त्र गल जायेंगे वही तुम्हें मन की शान्ति देगा। पर्यटन करते–करते पाण्डव लोहार्गल आ पहुचे तथा जैसे ही उन्होंने यहाँ के सूर्यकुण्ड में स्नान किया, उनके सारे अस्त्र–शस्त्र गल गये। इसके बाद भगवान शिव की आराधना कर मोक्ष की प्राप्ति की। उन्होंने इस स्थान के महत्व को समझ कर इसे तीर्थराज की उपाधि से विभूषित किया।

कहा जाता है कि महर्षि परशुराम ने अपने पापों का प्रायश्चित् करने के लिए इस स्थान पर वैष्णव यज्ञ करवाया था।[17] जिसका वर्णन स्कन्ध पुराण के रवाखण्ड में भगवान परशुराम कृत विष्णु यज्ञ के श्लोक में भी मिलते हैं। यहां यह स्मरणीय है कि भगवान परशुराम द्वारा स्थापित एवं पाण्डवों द्वारा पूजित शिवलिंग आज भी सूर्यकुण्ड के मुख्य प्रांगण में मौजूद है।

प्राचीन जनश्रुति के अनुसार लोहार्गल स्थित सूर्यमंदिर व सूर्यकुण्ड का निर्माण काशी के राजा सुर्यभान ने करवाया था। यह हिन्दुओं का महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल है। लोहार्गल भारत के प्रसिद्ध तीर्थ स्थलों में से एक है। महर्षि व्यास के वचनानुसार– ''लोहस्य अर्गलेव स्यात् पापानां सन्निरोधकम् यत्रत् लोहार्गलं नाम तीर्थ गुह्यतमं भुवि।'' अर्थात्

लोहे की अर्गला (सांकल) की भांति यह तीर्थ हृदय में पाप पुंजको को नहीं घुसने देता। अतएव इस गुप्त तीर्थ को लोहार्गल कहते हैं। हेमाद्रि संकल्प में भी चतुर्दश गुप्त तीर्थों में इस तीर्थ का उल्लेख मिलता है। लोहार्गल महात्म्य के अनुसार इस तीर्थ स्थान पर अनेक ऋषि महर्षियों ने समय–समय पर कठोर तपश्चर्या कर अपने लोकोत्तर प्रभाव का परिचय दिया। वस्तुतः यह एक ऋषि भूमि है। लोहार्गल में अवस्थित सूर्यकुण्ड से निकलने वाली जलीय धारा की तुलना बद्रीकाश्रम से निकलने वाली गंगा से करके इसके गौरव व महत्व को प्रतिपादित किया गया है।[18]

यहां माघ माह में सूर्यसप्तमी महोत्सव के साथ बड़े स्नान का आयोजन किया जाता है। इस जल कुण्ड में सोमवती अमावस्या के स्नान को बड़ा ही महत्व प्राप्त है। इस विशेष दिन लोग दूर–दराज से स्नान के लिए यहां पहुंचते हैं। इन सबके अतिरिक्त यहां मृत शरीर की भस्मी का विसर्जन किया जाता है। कहा जाता है कि गंगा नदी में अस्थि विसर्जन के पश्चात् मृतक की भस्मीं का यहां विसर्जन के साथ–साथ समूचे परिवार का इस कुण्ड में स्नान आवश्यक है। अन्यथा मृतक की आत्मां को शान्ति नहीं मिलती है।[19]

4.2 शाकम्बरी कुण्ड– शेखावाटी का यह शाकम्बरी शक्तिपीठ सीकर से 60 किलोमीटर दूर उदयपुरवाटी के पास स्थित है। यह शेखावाटी की प्राचीन धार्मिक नैसर्गिक सौन्दर्य स्थली है। इस प्राचीन मन्दिर में विक्रमीं संवत् 749 के तीन शिलालेख उपलब्ध है जिसके अनुसार चौहान राजा दुर्लभराज के भतीजे सिद्धराज ने शकदेवी (शाकम्बरी) का मण्डप बनवाया था। कहा जाता है कि देवी ने दुर्भिक्ष काल में फल व वनस्पति से जीव जगत की प्राण रक्षा की थी।[20]

नवरात्रों में यहां बड़ा मेला लगता है। भक्तगण यहां स्थित सप्तकुण्डों में स्नान कर माता के दर्शन लाभ पाते थे। पूर्व में यहां स्थित सप्तकुण्डों में निरन्तर जल प्रवाहित होता रहता था। इन जल कुण्डों में स्नान का अपना अलग ही महात्म्य था। ज़िला प्रशासन के द्वारा यहां बोरवैल खुदवाये जाने के कारण आजकल इन कुण्डों में प्रवाहित होने वाला जल बंद हो गया है। परन्तु शाकम्बरी मन्दिर के पश्चिम में अरावली की उपत्यकाओं में अवस्थित पहाड़ी झरने के रूप में प्रवाहित जल से निर्मित नागकुण्ड में स्नान की परम्परा पूर्व की भांति विद्यमान है। इस कुण्ड की गहराई शेखावाटी के सभी जलकुण्डों में सर्वाधिक है।[21]

4.3 मनसा शक्तिपीठ कुण्ड– यह मन्दिर झुन्झुनूं ज़िले के गुड़ा गांव में स्थित है। जो तहसील मुख्यालय से पूर्व दिशा में 41 किलोमीटर की दूरी पर गुढ़ा–नीम का थाना सड़क मार्ग पर स्थित है। मनसा माता मन्दिर के निर्माण के सम्बन्ध में प्रामाणिक सामग्री अभी तक प्रकाश में नहीं आई है। परन्तु इस शक्तिपीठ के 'मनसा सेवा समिति' नाम से एक ट्रस्ट गठन स्व. ओमप्रकाश अग्रवाल ने किया था।[22] नवरात्रों के अवसर पर यहां भी मेला लगता है। मन्दिर परिसर में बने कदम कुण्ड में तीर्थाटन पर आये हुये लोग स्नान करते हैं, तत्पश्चात् माता रानी के दर्शन कर अनुगृहीत होते हैं। कहा जाता है कि इस जल कुण्ड का निर्माण नवलगढ़ के भक्त सेठों ने करवाया था।[23] कुण्ड के इर्द–गिर्द कदम के वृक्ष होने के कारण इसे कदम कुण्ड कहा जाता है। इस कुण्ड में पहाड़ी झरनों का पानी प्रवाहित होता रहता है।[24]

4.4 किरोड़ी कुण्ड– किरोड़ी उदयपुरवाटी से 8 किलोमीटर दक्षिण–पश्चिम दिशा में स्थित है। इस गांव के तीन ओर पहाड़ियां हैं। किरोड़ी पहाड़ों की गोद में बसा प्राकृतिक सौन्दर्य से सुवासित गांव है। यहां के गुनगुने जल के तीन कुण्ड (छोटे जलाशय) धार्मिक दृष्टि से पवित्र माने जाते हैं। यह पवित्र स्थल लोहार्गल की 24 कोसीय परिक्रमा के तहत 9 महत्वपूर्ण धार्मिक तीर्थ स्थलों में से एक है। अतः तीर्थ यात्री यहां स्नान करके पुण्य लाभ अर्जित करते हैं।[25]

4.5 गणेश्वर कुण्ड– सीकर ज़िले की नीम का थाना तहसील में स्थित गणेश्वर अपने प्राकृतिक झरने, उसके धार्मिक महात्म्य व ताम्रयुगीन संस्कृति की जननी के रूप में विख्यात है। यहां स्थित शिवमन्दिर में स्थापित शिवलिंग पर प्राकृतिक झरने का पानी एक पाइप के माध्यम से आकर गिरता है। यह जलधारा निरन्तर प्रवाहित होती रहती है। इसके बारे में कहा जाता है कि प्राचीन काल में एक नाग झरने से पानी लाकर रोज शिवजी के शिवलिंग पर चढ़ाता था। माना जाता है कि किसी समय गालव ऋषि इसी स्थान पर तपस्या किया करते थे। इसी कारण झरने को 'गालव गंगा' तथा झरने के पानी से निर्मित झील को 'गालव गंगा झील' कहा जाता है।[26] यहां यह स्मरणीय है कि इस झील की पानी की एक धारा का जल गर्मियों में भी बेहद शीतल होता है। इस स्थल पर तीर्थ यात्रियों व पर्यटकों का स्नानादिक उद्देश्यों के निमित्त सदैव तांता लगा रहता है।[27]

4.6 कदमां का बास का कुण्ड– सीकर ज़िले की धोद पंचायत समिति का गांव कदमा का बास ज़िला मुख्यालय से 14 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस ग्राम का नामकरण यहां स्थित जल कुण्ड पर विद्यमान कदम के पेड़ों की विद्यमानता के चलते पड़ा। ये पेड़ शेखावाटी में मनसा मन्दिर परिसर में भी विद्यमान हैं। ये पेड़ अपने धार्मिक महत्व के कारण आज भी पूजे जाते हैं। इन पेड़ों के इस धार्मिक महात्म्य के चलते इस स्थल पर बने कुण्ड पर भाद्रपद माह की अमावस्या को मेला लगता है। पहले इस कुण्ड के पानी में लोग डुबकियां लगाते थे। परन्तु आजकल यह कुण्ड विभिन्न देवी–देवताओं की मूर्तियों के विसर्जन के लिए प्रयोग किया जा रहा है। जनश्रुति के अनुसार इस कुण्ड का निर्माण चौखा के बास के चौखाराम ने करवाया था।[28]

4.7 श्याम कुण्ड– ज़िला मुख्यालय सीकर से 48 किलोमीटर दूर दक्षिण–पूरब में दातारामगढ़ तहसील में खाटू नामक ग्राम है। इस ग्राम में श्यामजी का देश–विदेश में विख्यात मन्दिर होने के कारण इसे खाटूश्यामजी कहते हैं।[29] श्यामजी शेखावाटी में ही नहीं वरन् सम्पूर्ण भारतवर्ष में भगवान श्री कृष्ण के ही एक रूप माने जाते हैं। कहा जाता है कि यहां प्रवाहित होने वाली रूपावती नदी में पाण्डव भीम के पौत्र बर्बरीक का सिर कुरूक्षेत्र की भूमि से बहता हुआ इस ग्राम तक पहुंच गया। जिसके आधार पर हरफूलसिंह आर्य लिखते हैं कि श्याम बाबा बर्बरीक के सिर के रूप में खाटू की भूमि में समाये रहे। वे कुण्ड के पास खड़ी गाय का दूध देवकला से खींचकर पीने लगे। अतः गाय के मालिक ने उस स्थान को खुदवाया तो वहां श्याम बाबा की मूर्ति निकली। तत्पश्चात् वहीं पर उसे स्थापित करा दिया गया।[30] यहां पर फाल्गुन तथा कार्तिक माह में शुक्ल पक्ष की एकादशी व द्वादशी को वर्ष में दो बार मेला भरता है। इस मेले में देश–विदेश से लाखों श्रृद्धालु श्यामजी के दर्शनार्थ आते हैं। मेले में कुछ जातरू अपनी मनोकामना की सिद्धी प्राप्ति से पूर्व व पश्चात् अपने निवास स्थल से ही हाथ में बड़े–बड़े निशान लिये नंगे पांव पैदल बाबा के जयकारे बोलते हुए आते हैं। कुछ पेट के बल श्याम बाबा को दण्डवत् प्रणाम करते हुये दरबार में पहुंचते हैं और श्यामजी के दर्शन कर कृतार्थ होते हैं।[31] बाबा के दर्शन के पश्चात् श्याम बाबा मन्दिर परिसर में बने विशाल जलकुण्ड में स्नान करते हैं व स्वयं को धन्य करते हैं।

संदर्भ

[1] मिश्र, रतनलाल, प्रथम संस्करण 1998 : शेखावाटी का नवीन इतिहास, कुटीर प्रकाशन, मण्डावा (झुन्झुनूं), पृ. सं. 165, 185 व 186
[2] शेखावात, सुरजन सिंह, 1989 : शेखावाटी प्रदेश का प्राचीन इतिहास, झुन्झुनूं, श्री शार्दुल एज्युकेशन ट्रस्ट, पृ. सं. i–viii
[3] पूर्वोक्त।
[4] मिश्र, रतनलाल, प्रथम संस्करण 1998 : शेखावाटी का नवीन इतिहास, पृ. सं. 2
[5] शेखावात, सुरजन सिंह, 1989 : शेखावाटी प्रदेश का प्राचीन इतिहास, पूर्वोक्त।
[6] देखें, राजस्थान सरकार की विभागीय वेबसाइट https://www.sikar.rajasthan.gov.in; https://www.jhunjhunu.rajasthan.gov.in

[7] मिश्र, रतनलाल, प्रथम संस्करण 1998 : शेखावाटी का नवीन इतिहास, पृ. सं. 52

[8] शेखावाटी के सत्रहवीं सदी के तरेपनिया व उन्नीसवीं सदी के छपनिया अकाल की कहानियां आज भी लोगों की जुबां से सुनी जा सकती हैं।

[9] मेहराबदार छतरीयुक्त कलात्मक जोहड़ सम्पूर्ण विश्व में केवल शेखावाटी क्षेत्र में ही पाए गए हैं।

[10] देखें, श्रावण माह में भरने वाला लोहार्गल का कावड़ियों का मेला व 24 कोसीय मालकेतु पर्वत की परिक्रमा।

[11] स्थानीय सूचना, जनसम्पर्क व प्रत्यक्ष दर्शन के आधार पर।

[12] लोहार्गल के सूर्यमन्दिर में स्थित 'लोहार्गल महात्म्य' से साभार उद्धृत।

[13] स्थानीय सूचना, जनसम्पर्क व प्रत्यक्ष दर्शन के आधार पर।

[14] ये प्रायः वर्गाकार उल्टी यज्ञवेदी के आकार की ईंट, चूने व पत्थरों से निर्मित एक वास्तु संरचना होती हैं। इसके भीतर सीढ़ीदार फिरनियां होती हैं। जिन्हें सम्मिलित रूप से चौपड़ा कहा जाता है। इसकी गहराई 15 से 20 फिट तक होती है। इनमें वर्षा या पहाड़ी झरने का पानी निरन्तर प्रवाहमान रहता है।

[15] हरिद्वार के विद्वान पण्डित् गंगाराम के कथनानुसार।

[16] स्थानीय सूचना, जनसम्पर्क व प्रत्यक्ष दर्शन के आधार पर।

[17] आर्य, एच. एस., द्वितीय संस्करण, 2013 : शेखावाटी का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, पंचशील प्रकाशन, फिल्म कॉलोनी, जयपुर, पृ. सं. 207

[18] लोहार्गल स्थित सूर्य मन्दिर में मोजूद 'लोहार्गल महात्म्य' से साभार उद्धृत।

[19] प्रचलित जनश्रुति व प्रत्यक्ष दर्शन के आधार पर।

[20] आर्य, एच. एस., द्वितीय संस्करण, 2013 : शेखावाटी का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, पृ. सं. 208

[21] स्थानीय सूचना, जनसम्पर्क व प्रत्यक्ष दर्शन के आधार पर।

[22] राठौड़, मनोहरसिंह, 2004 : उदयपुरवाटी दिग्दर्शन, उदयपुरवाटी विकास स्मारिका प्रकाशन समिति, गुढ़ा गौड़जी (झुन्झुनूं), पृ. सं. 94

[23] नवलगढ़ एक झलक पुस्तक से साभार उद्धृत।

[24] स्थानीय सूचना व प्रत्यक्ष दर्शन के आधार पर।

[25] प्रत्यक्ष दर्शन के आधार पर।

[26] मोहनलाल गुप्ता के जयपुर संभाग का अध्ययन नामक पुस्तक से साभार उद्धृत।

[27] जनश्रुति के आधार पर।

[28] कदमां का बास के स्थानीय निवासी तेजाराम के कथनानुसार।

[29] राजस्थान ज़िला ग़ज़ेटियर, सीकर, 1988, पृ. सं. 473

[30] आर्य, एच. एस., द्वितीय संस्करण, 2013 : शेखावाटी का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, पृ. सं. 208

[31] स्थानीय सूचना, जनसम्पर्क व प्रत्यक्ष दर्शन के आधार पर।

****